The Chitransh Academic & Research
An International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume2 | Issue 2 | June 2026
ISSN: 3049-303X (Online)
Website: www.thechitranshacadmic.in

भक्ति-संगीत के विविध रूप

डॉ. दीप्ति बंसल

एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत विभाग (गायन), दौलत राम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

लेख विवरण

शोधपत्र

प्राप्ति तिथि: 09/06/2026
स्वीकृति तिथि: 21/06/2026
प्रकाशनतिथि: 30/06/2026

मुख्य शब्द: नाद, भक्ति , भजन, कीर्तन, मुक्ति

सारांश

भक्ति एक भाव है जो हमें ईश्वर से जोड़ता है। संगीत के माध्यम से जब हम इस भावना को अभिव्यक्त करते हैं तो वह भक्ति-संगीत कहलाता है। विश्व के चार पुरुषार्थ माने गए हैं—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इन सबकी प्राप्ति कराने वाला एकमात्र साधन नाद है। भक्ति-संगीत के विविध रूप हैं, जैसे—मंत्र-संगीत, शास्त्रीय गायन शैलियाँ, हवेली संगीत, भजन, कीर्तन, सूफ़ी संगीत, चित्रपट-भक्ति गीत आदि। इन सभी के माध्यम से मनुष्य भक्ति व शांत रस की अनुभूति कर सकता है। संगीत हमारी आत्मा का सात्विक आहार है। स्वर हमारी शारीरिक तथा मानसिक तंत्रिकाओं को प्रभावित कर एक सकारात्मक ऊर्जा पैदा करते हैं। भक्ति-संगीत के माध्यम से मनुष्य भक्ति व शांत रस का आनंद ले सकता है। निस्वार्थ प्रेम व श्रद्धा से युक्त भक्ति हमें परमात्मा की ओर उन्मुख करती है। संगीत के माध्यम से हम मुक्ति के मार्ग की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

प्रस्तावना -

ईश्वर के प्रति अनन्य प्रेम तथा समर्पण की भावना को ही 'भक्ति' कहते हैं। संगीत के माध्यम से जब हम इस भावना को अभिव्यक्त करते हैं तो वह भक्ति संगीत कहलाता है। सत्रहवीं शताब्दी में संगीत के विद्धान पंडित दामोदर ने 'संगीत दर्पण' नामक ग्रंथ लिखा। इस ग्रंथ में उन्होंने संगीत को ईश्वर-भक्ति और मोक्ष-प्राप्ति का साधन माना है। वे संगीत दर्पण में लिखते हैं -

'धर्मार्थकाममोक्षाणामिदमेवैक साधनम्'

अर्थात् विश्व के चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष हैं। इन सबकी प्राप्ति कराने वाला एकमात्र साधन 'नाद' है। शास्त्रीय संगीत के सुप्रसिद्ध गायक कलाकार पंडित ओंकारनाथ ठाकुर का विचार था - 'नादब्रह्म से ही परम ब्रह्म की प्राप्ति हो सकती है।' विश्वविख्यात वॉयलिन वादक यहूदी मेन्युहिन के अनुसार - 'परमात्मा की प्राप्ति के लिए मानव का सर्वोच्च साधन संगीत है।' प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक, सभी संगीत-शास्त्रकारों, चिंतकों, गायकों व वादकों ने संगीत कला को केवल मनोरंजन का साधन न मानकर दिव्य आनंद प्राप्त करने की उत्तम कला माना है। ईश्वर भक्ति हेतु गायन को सहज और श्रेष्ठ माना गया है। स्वर, लय और शब्द से युक्त गीत गायक कलाकार के मनोभावों को सहज अभिव्यक्ति देता है। साथ ही वह श्रोताओं से तादात्म्य बनाने में सक्षम है। संगीत और काव्य के समन्वित रूप में भावों की अभिव्यक्ति प्रभावशाली होती है। भक्ति-परक काव्य संगीत में ढल कर सभी को भक्ति-रस का आस्वादन करा देता है।

भक्ति-संगीत के रूप -

मंत्र-संगीत -

वैदिक युग भारत के सांस्कृतिक और सांगीतिक इतिहास का प्राचीनतम युग है। वेद चार हैं - ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद। सामवेद को संगीत का आधार माना जाता है। ईश्वर की आराधना के लिए ऋग्वेद के छंदमय मंत्रों को विशेष स्वरों से युक्त कर गान करने का विधान ही 'साम' कहलाया। आर्यों के यज्ञ आदि विशिष्ट धार्मिक कर्मों में सामगान अनिवार्य था।

Corresponding Author: deepti.bansal223@gmail.com

वैदिक ऋषि-मुनियों की मान्यता थी कि गायन के द्वारा देवताओं की आराधना कर उन्हें प्रसन्न किया जा सकता है। वेद, उपनिषद, ब्राह्मण-ग्रंथों, पुराणों आदि में संगीत द्वारा ईश्वर उपासना के स्पष्ट उदाहरण मिलते हैं। वैदिक कार्यों के लिए मंत्रों का शुद्ध उच्चारण अनिवार्य माना जाता था। इसीलिए ऋषि-मुनियों ने 'ध्वनि विज्ञान' के अटल, कड़े नियमों को हज़ारों साल पहले ही निर्धारित कर दिया था। (सर्राफ, 2010) वर्तमान में मंत्रों का संगीतमय गायन व जाप, आराधना हेतु व मानसिक शांति हेतु किया जाता है। गायिका अनुराधा पौडवाल द्वारा गाया गया गायत्री मंत्र (अक्टूबर 2012) वर्तमान में काफी लोकप्रिय है।

शास्त्रीय संगीत -

शास्त्रीय संगीत के अंतर्गत बहुत से ऐसे राग हैं जो भक्ति और शांत रस उत्पन्न करते हैं। जैसे भैरव, विभास, भूपाली, भीमपलासी, मालकौंस, यमन इत्यादि। अन्य राग-रागिनियों में भी भक्ति-भाव से युक्त रचनाऐं मिल जाती है। ध्रुपद, शास्त्रीय संगीत की एक प्राचीन गायन शैली है। इसकी विशेषता नाद ब्रह्म की उपासना है। इसके अंतर्गत शांत रस तथा भक्ति रस की प्रधानता रहती है। इसके विषय विविध है किंतु ईश्वर-स्तुति, भक्ति, दर्शन, मंगल-उत्सवों का वर्णन इसकी बंदिशों में मुख्य रूप से मिलता है। राग भैरव में चैताल में निबद्ध एक भक्ति-परक रचना निम्न प्रकार से है -

'विष्णु चरन जल ब्रह्मा कमंडल

शिव जटा राजत देवी गंगे' (गर्ग, जून 1985)

ख़्याल गायन में भी अनेक बंदिशें ऐसी मिलती हैं जो भक्ति भाव लिए हुए हैं। जैसे - राग भटियार की एकताल में निबद्ध निम्न बंदिश -

'देवन पति महादेव, शंकर मन भाए
शीश गंगा और चन्द्र डमरू हर बजाये
गले भुजंग भस्म अंग, गौरी को रहे संग
मुंडन की भाल सोहे, हर हर हर गाए' (देवी, सविता)

पुष्टिमार्गी हवेली संगीत -

पुष्टिमार्गीय हवेली संगीत की परम्परा सोलहवीं शताब्दी में प्रारंभ हुई थी। इसे वल्लभ

सम्प्रदाय के श्री वल्लभाचार्य ने प्रारंभ किया था। 'हवेली' शब्द का अर्थ यहाँ मंदिर या विशाल भवन से है। पुष्टि संप्रदाय वैष्णव धर्म का संप्रदाय है। हवेली संगीत प्रमुखतः श्रीकृष्ण की लीलाओं और स्तुतियों पर आधारित है जिसे हवेलियों (पुष्टिमार्गीय मंदिरों) में प्रस्तुत किया जाता था। ध्रुपद-धमार शैली में यह संगीत विशुद्ध रूप से ईश्वर को समर्पित है। इसके प्रचार प्रसार में अष्ट छाप के कवियों जैसे सूरदास, कुंभन दास, परमानंद दास, कृष्ण दास, गोविन्द स्वामी, छित स्वामी, चतुर्भुज, नंददास ने अपना विशिष्ट योगदान दिया। 'नवधा भक्ति' द्वारा आराध्य की आराधना करना और ईश्वर के साथ तादात्मय स्थापित करना, यही वैष्णव भक्त का उद्देश्य है। पुष्टिमार्गीय संगीत में रागबद्ध कीर्तन भी होता है। इन रचनाओं में कृष्ण के बाल-रूप की क्रीड़ाओं का भी वर्णन मिलता है। राग यमन में अद्धा ताल में बद्ध ऐसी ही एक रचना पंडित रतन मोहन शर्मा ने प्रस्तुत की है -

'हँस हँस दूध पीवत नाथ

मधुर कोमल वचन कहि कहि

प्राण पियारी साथ' (जनवरी 2015)

पंडित जसराज ने हवेली संगीत की निम्न भक्ति-रचना को अत्यंत खूबसूरत ढंग से गाया है -

'माई मेरो मन मोहयो

सांवरे मोहे घर अंगना ना सुहायो' (अगस्त 2018)

भजन -

भजन सुगम संगीत की एक भक्ति परक गायन शैली है। ईश्वर का गुणगान या उनसे प्रार्थना जिन गीतों में हो उन्हें हम भजन की संज्ञा दे सकते हैं। इन गीतों में भक्ति रस, शांत रस और वैराग्य की प्रधानता रहती है। भजन किसी भी भाषा, राग व ताल में रचे जा सकते हैं। सगुण उपासना के कारण इस विधा का अधिक प्रचार व प्रसार हुआ है। निर्गुण भक्ति, प्रेम मार्गी, सूफ़ी भक्ति, प्रेम लक्षणा कृष्ण भक्ति, मर्यादामार्गी रामभक्ति, भक्तिपरक काव्य 'भजन' कहलाता है। (गर्ग, मई 1978) भारतीय साहित्य में मध्यकाल (14वीं से 17वीं शताब्दी तक) को

भक्ति काल का 'स्वर्ण युग' कहा जाता है। इस काल के मुख्य कवि थे संत रैदास, कबीरदास, सूरदास, तुलसीदास, मीराबाई, रसखान, गुरु नानक देव, दादू दयाल, मलूक दास आदि। भक्ति को सहज व सरल बनाने में इन कवियों ने अपना योगदान दिया। भक्तिकालीन काव्य को निर्गुण तथा सगुण दो प्रकार की धाराओं में विभाजित किया गया है।

निर्गुण भक्तिधारा में ज्ञानमार्गी तथा प्रेममार्गी और सगुण भक्तिधारा में राम तथा कृष्ण की भक्ति आती है। जनसामान्य सगुण भक्तिधारा के काव्य से अधिक प्रभावित रहता है। सगुण भक्त कवियों में मीराबाई जी की निम्न रचना बहुप्रचलित है।

'मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई

जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई'

इसी प्रकार संत तुलसीदास की निम्नलिखित रचना को बहुत से कलाकारों ने अपना स्वर दिया है -

'रघुवर तुमको मेरी लाज

सदा सदा में शरण तिहारी, तुम हो ग़रीब नवाज़'

इसी प्रकार सूरदास जी की एक सुंदर रचना है -

'रे मन कृष्ण नाम कहि लीजे

गुरु के वचन अटल करि मानहिं साधु समागम कीजे'

प्रत्येक प्राणी के आराध्य देव अलग-अलग होते हैं जैसे - गणेश, शिव, विष्णु, राम, दुर्गा, कृष्ण, सूर्य आदि। संस्कृत भाषा में देवी-देवताओं के अनेक स्तोत्र मिलते हैं जिनका गायन भजन के रूप में किया जाता है। जैसे - आदि शंकराचार्य द्वारा रचित 'शिव पञ्चाक्षर स्तोत्रम्', महर्षि वेद व्यास द्वारा रचित 'श्रीविश्वनाथाष्टकम्', श्री ब्रह्मानंद स्वामी द्वारा रचित 'गोविन्दाष्टकम्', महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित 'गंगाष्टकम्' आदि।

भारतीय चित्रपट संगीत के अंतर्गत भी भक्ति रचनाओं का खूब प्रयोग दिखाई देता है। इनका संगीत भी भक्ति व शांत रस का संचार करता है।

Corresponding Author: deepti.bansal223@gmail.com

पुरानी फ़िल्म 'दो आँखे बारह हाथ' का भक्ति गीत 'ए मालिक तेरे बंदे हम' बहुत प्रसिद्ध है। फ़िल्म 'हम दोनों' में लता मंगेशकर का गाया भजन -

'अल्ला तेरो नाम, ईश्वर तेरो नाम

सबको सनमति दे भगवान्'

हृदय को झंकृत कर देता है। इसी प्रकार बहुत से ऐसे बहुचर्चित भजन हैं जिन्होंने श्रोताओं का मन मोह लिया है जैसे - 'तू प्यार का सागर है, तेरी इक बूंद के प्यासे हम' या फिर 'इतनी शक्ति हमें देना दाता मन का विश्वास कमज़ोर हो ना', या फिर 'गुड्डी' फ़िल्म की ये प्रार्थना -

'हम को मन की शक्ति देना, मन विजय करे

दूसरों की जय से पहले खुद को जय करें'

भक्ति रचनाऐं पारंपरिक हों, नवीन अथवा जाने-माने कवियों द्वारा रचित, श्रोताओं के मन में भक्ति-भाव जगाती है। संगीत के माध्यम से उन्हें भक्ति रस की अनुभूति होती है।

कीर्तन -

कीर्तन ईश्वर के प्रति प्रेम-समर्पण का एक माध्यम है। यह समूह या मंडली में किया जाता है। कीर्तन में गाए जाने वाले सभी भक्ति गीत संगीतमय होते हैं। कीर्तन के माध्यम से ईश्वर के गुणों, महिमा और लीलाओं का गान किया जाता है। इसमें अक्सर एक मुख्य गायक पदों को गाता है और उसकी मंडली उसे दोहराती है। साथ ही उपस्थित श्रोता भी गायन में शामिल होते हैं। इन भक्ति रचनाओं को हारमोनियम, करताल, ढोलक, मंजीरे आदि के साथ गाया जाता है। कीर्तन परंपरा में नवधा भक्ति अर्थात् नौ प्रकार की भक्ति आती है।

इसके अंतर्गत श्रवण (ईश्वर की कथाओं को सुनना), कीर्तन (प्रभु की लीला का गुणगान करते हुए संकीर्तन करना), स्मरण (ईश्वर का निरंतर ध्यान करना), पाद सेवन (भगवान् के चरणों की सेवा करना), अर्चना (विधि-विधान से ईश्वर के स्वरूप की पूजा करना), वंदना (ईश्वर की स्तुति करना), दास्य (भगवान के प्रति स्वयं को सेवक के रूप में प्रस्तुत करना), सख्य (ईश्वर को अपना सखा मानना), आत्म-निवेदन (अपना तन, मन, धन ईश्वर को सौंप देना) ये नौ रूप आते हैं। कीर्तन परम्परा के मुख्य प्रचारक नामदेव, चैतन्यदेव, जयदेव और आचार्य वल्लभ माने जाते

Corresponding Author: deepti.bansal223@gmail.com

हैं।

अष्टछाप कवि जैसे सूरदास, मीराबाई, तुलसीदास आदि का भी इसमें हाथ रहा है। कीर्तन मुख्यतः चार प्रकार के होते हैं - यात्रा कीर्तन, अष्टयाम-कीर्तन, विषय-कीर्तन और भजन कीर्तन। कीर्तन से सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है और तनाव दूर होते हैं। इस्कॉन मंदिर के कीर्तन का एक सुंदर उदाहरण निम्न प्रकार से है -

'हरे कृष्णा हरे कृष्णा, कृष्णा कृष्णा हरे हरे

हरे रामा हरे रामा, राम राम हरे हरे' (जून 2025)

लोक-भजन -

हमारे देश के विभिन्न प्रांतो में लोक गीतों की असीम निधि है। इसी प्रकार लोक-भजन भी हैं जो जन सामान्य के जीवन में व्याप्त हो जाते हैं। सामान्य जनता भी उन्हें गाती है और आनंद लेती है। इन भजन गीतों में जीवन की अनेक समस्याओं का विश्लेषणात्मक समाधान भी अन्तर्निहित रहता है। मानव मन की सहज भावनाओं की अभिव्यक्ति इन गीतों में दिखाई देती है। ये भजन क्षेत्रीय धुनों से प्रभावित रहते हैं और ढोलक, मंजीरा जैसे वाद्यों के साथ गाए जाते हैं। इनमें ईश्वर की लीला के साथ-साथ आम जीवन से जुड़ी सीख भी शामिल होती है। कबीर, सूर, मीरा आदि कवियों की बहुत सी रचनाऐं अपनी अत्यंत मधुर धुनों के कारण लोक-भजन बन गए। जैसे -

'मन लागो मेरो यार फकीरी में' (जुलाई 2013)

सूफ़ी-भक्ति संगीत -

सूफ़ी संगीत ईश्वर के प्रति भक्ति, प्रेम और रहस्यवाद से ओत-प्रोत है। भारतीय उपमहाद्वीप के कवियों, सूफ़ी, संतों और फ़कीरों के माध्यम से सूफ़ी संगीत का प्रचार व प्रसार हुआ। यह एक रूहानी गायिकी है। सूफ़ी संगीत एक ऐसी उन्मुख गायन शैली है जिसका उद्देश्य श्रोता की आत्मा को जगाना और उसे ईश्वर के दिव्य प्रेम से जोड़ना है। सूफ़ी गायन का प्रसिद्ध रूप कव्वाली है जो आम तौर पर सूफ़ी संतों की दरगाह पर गाई जाती है। सूफ़ी काव्य में प्रेम भावना और सभी के प्रति सहिष्णुता की भावना का चित्रण मिलता है। सूफ़ी कवियों की

Corresponding Author: deepti.bansal223@gmail.com

परम्परा में मलिक मुहम्मद जायसी, कुतुबन, नूर मुहम्मद, जलालुद्दीन रूमी, अमीर खुसरो, बुल्ले शाह, बाबा फ़रीद आदि के नाम प्रमुख हैं। हज़रत अमीर खुसरो की सर्वप्रसिद्ध रचना है -

'छाप तिलक सब छीनी रे मोसे नैना मिलाइके'

इस रचना में उन्होंने गुरु-भक्ति और ईश्वर के प्रति समर्पण को दर्शाया है। 18वीं सदी के बाबा बुल्ले शाह एक महान् पंजाबी सूफ़ी संत थे। वे मानवतावादी थे। उनकी सबसे प्रसिद्ध आध्यात्मिक रचना है -

'बुल्ला की जाणा मैं कौन'

बाबा फरीद चिश्ती सिलसिले के प्रमुख सूफ़ी संतों में से एक थे। उनकी रचनाएंे मुख्यतः पंजाबी और फारसी भाषा में थीं। शबद और श्लोक के रूप में उनकी रचनाऐं मिलती हैं जो जीवन की सत्यता, मानवता और ईश्वर की अटूट भक्ति का संदेश देती हैं। उनका एक प्रसिद्ध श्लोक है -

"फरीदा काले मैंडे कपड़े, काला दिल भी होए

रब्बा मेरे कपड़े धो, दिल सुफैद कर होए"

अर्थात् - केवल बाह्य वस्त्र ही काले नहीं हैं अपितु मन भी काला है। हे प्रभु! मेरे कपड़े ही नहीं, मेरा मन भी शुद्ध कर दे।)

भारतीय चित्रपट संगीत ने भी सूफ़ी संगीत को एक नया रंग दिया है। उन्होंने सूफ़ी संगीत को विशिष्ट अंदाज़ से प्रस्तुत कर लोकप्रिय बनाया है। 'ख़्वाजा मेरे ख़्वाजा' (फ़िल्म - जोधा अकबर) चित्रपट संगीत का एक बेहतरीन सूफ़ी गीत है। सुप्रसिद्ध संगीतकार ए.आर. रहमान द्वारा संगीतबद्ध सूफ़ी रचना 'पिया हाजी अली' उन्नीसवीं शताब्दी के संत पीर हाजी अली शाह बुखारी को समर्पित एक उत्कृष्ट रचना है। सन् 2000 में बनी फ़िल्म 'फ़िजा' में इसका प्रयोग हुआ है। इसी प्रकार 'ए री सखी मोरे पिया घर आए' अमीर खुसरो द्वारा रचित एक रचना है जिसे निज़ामी बंधु व उस्ताद राशिद खाँ जैसे कलाकारों ने भी गाया है। सूफ़ी संगीत के माध्यम से भक्ति का खूब प्रचार व प्रसार हुआ है।

निष्कर्ष -

Corresponding Author: deepti.bansal223@gmail.com

भक्ति, **श्रद्धा व प्रेम से युक्त आसक्ति है अपने इष्ट के प्रति। इसे हम शुद्ध**, निस्वार्थ, दिव्य प्रेम कह सकते हैं जो पूर्ण समर्पण व सहजता से अपने प्रियतम अथवा ईश्वर के प्रति **प्रवाहित होता है। भक्ति संगीत एक सशक्त माध्यम है इस प्रेम को अभिव्यक्ति देने का।** संगीतमय भक्ति की विधा चाहे मंत्र संगीत हो, शास्त्रीय संगीत, हवेली संगीत, भजन, कीर्तन, लोक-रचनाऐं, **सूफ़ी संगीत अथवा चित्रपट भक्ति संगीत**, सभी का उद्देश्य मनुष्य के विचारों में **शुद्धता व प्रेम उदय करके ईश्वर की ओर उन्मुख होना है। भक्ति के माध्यम से मनुष्य अपने तनावों व महत्त्वाकांक्षाओं से ऊपर उठ कर सकारात्मक गुण व ऊर्जा की ओर अग्रसर होता है।** स्वर, लय व भाव को संजो कर मन, वचन, कर्म से अपने अंतस को ईश्वर से जोड़ना भक्ति-**संगीत का उद्देश्य है। संगीत के माध्यम से हम परमात्मा की चेतना से जुड़ सकते हैं और मुक्ति** के मार्ग पर अग्रसर हो सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. गर्ग, लक्ष्मीनारायण (जून 1986), क्रमिक पुस्तक-मालिका, **दूसरी पुस्तक संगीत** कार्यालय, हाथरस। पृ. 211, 212
2. गर्ग, लक्ष्मीनारायण (मई 1978), भक्ति और संगीत, निबंध संगीत, **संगीत कार्यालय**, हाथरस। पृ. 536
3. सर्राफ, डॉ. रमा (2010), भारतीय संगीत सरिता, विद्यानिधि प्रकाशन, **दिल्ली**। पृ. 13
4. विदुषी सविता देवी (बनारस घराना) से प्राप्त बंदिश।
5. Dera, Satish & Chorus (July 2013), Youtube@ VeenaMusicRajasthani.
6. Gayatri Mantra, (Oct 2012), Infinite spirit, Youtube@T Series Bhakti Sagar.
7. Haveli Sangeet (20 August 2018), youtube@vintageaudio54.
8. (Jan 2015), Youtube@lamsaurabhchoksi.
9. (June 2025), youtube@Pure Krishna Vibes.

Corresponding Author: deepti.bansal223@gmail.com